द्वितीय अध्याय

'मनुष्य के रूप' उपन्यास की कथावस्तु ।

- द्वितीय अध्याय -

' मनुष्य के रूप ' उपन्यास की कथावस्तु --

कथावस्तु --

' मनुष्य के रूप ' की कथा का आधार द्वितीय विश्वयुध्द के समय की राजनीतिक परिस्थितियाँ है। स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास में सन १९४२ का ' भारत छोडो ' आंदोलन बडाही महत्वपूर्ण रहा है। इस समय कम्युनिष्ठ पार्टी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण अंग्रेजी सरकार के निकट आ गई थी और द्वितीय विश्वयुध्द में अनुकुल वातावरण उत्पन्न करना चाहती थी। कम्युनिस्ट पार्टी के तत्कालीन दृष्टिकोण का औचित्य कथानक के एक अंश का मूल आधार है, जिसकी अभिव्यक्ति कथा नायक भूषण के माध्यम से हुई है। ' मनुष्य के रूप ' के महत्वपूर्ण कथांश का आधार लेखक की कल्पना ही है। लेखक सोमा के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि, इन्सान परिस्थिति के व्दारा नित्य परिवर्तित होता रहता है।

यह उपन्यास पूर्णत: सामाजिक उपन्यास है। लेखक की राजनैतिक प्रतिबध्दता के कारण ही कथा के मध्य राजनैतिक गतिविधी का समावेश हो गया है।

' मनुष्य के रूप ' का कथानक कांगडा के पहाडों की सुन्दर, सरल और सुषमामयी भूमि से लेकर आसाम और बम्बई के व्यस्त एवं संघर्षमय जीवन तक फैला है। कथावस्तु का प्रारंभ नाटकीय और अंत दिल को व्यथित करनेवाला है।

" उपन्यास ने अपनी परिधि में राजनीतिक, नैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को समेटा ही है, उसके साथ ही फिल्मी जीवन की रंगीन और भ्रष्ट झाँकियों का एक झरोखा भी प्रस्तुत किया है।"[१]

सोमा पहाडी प्रदेश में रहनेवाली विधवा है। जिस प्रदेश में सोमा रहती है - धनसिंह उसी प्रदेश में मोटर चलाता है। सोमा सडक के किनारे बकरियाँ और मेमने चराया करती है। एक दिन सोमा अपने मेमनों को बचाने के प्रयत्न में अचानक धनसिंह की लॉरी के नीचे आ जाती है। यंत्र की स्वाभाविकता और कुशल मोटर चालक होने के कारण धनसिंह उसे बचा लेता है, लेकिन मोटर का एक पार्ट टूट जाने की वजह से क्रोध में अनेक गालियाँ देता हुआ नीचे उतरता है परन्तु एक असहाय स्त्री के मुँहसे आर्द्र स्वर, शरीर की थिरकन और सिसकियों भरे स्वर में यह स्वर सुनता है," परदेसिया, तुझे ही मुझसे क्या बैर था ? अच्छी भली चलती मोटर रोक दी, झगडा मिट जाता रोज-रोज का।"[२] यह सुनते ही उसका क्रोध कम होकर हँसी में बदल जाता है और उसीके साथ वह कहता है " भवाने अब उठ। सडक छोड। घर जा। नहीं तो गाडी में ही बैठ तुझे भी संग ले चलूँ।"[३]

यही प्रारंभिक संवाद दोनों को प्रेम की ओर आकृष्ट करता है। सोमा के जरिए उसे इस बात का पता चलता है कि, सोमा ससुराल में रहती है। सोमा के सास-ससुर, रुपये प्राप्त करने के लिए उसे बेच देना चाहते है। उसका फूट-फूट कर रोना। उसकी सरल-सीधी बातें - ' जी, तुम बडे भले लोग हो, दो बरस से कोई मुझसे ऐसे नहीं बोला, ऐसे अल्फाज याद आ जाते हैं और मन में अजीब मिठास होने लगती है, जो एक प्रेमी को अपनी प्रेमिका के मिलन में होती है। धनसिंह की स्त्री के प्रति हमेशा ही धारणा अविश्वास की थी -- "धनसिंह लडकपन

---

१ प्रो. प्रवीण नायक - यशपाल का औपन्यासिक शिल्प - पृ.८७।

२ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.९।

३ वही पृ.३२।

से ही स्त्रियों को धूर्त बिल्लियों की तरह समझाता था जो धीमे मीठी बोलती है, ओट में रहती हैं, चोरी करती है और मौका लगने पर नोंच लेती है।" [१] लेकिन धनसिंह सोचता है कि, सोमा कितनी सीधी, कितनी दुःखी थी, उसमें कपट नहीं था।

धनसिंह की लॉरी टूट जाने की वजह से रात वहीं काटनी पड़ती है। भूख के कारण उसके पाँव सोमा के घर की तरफ बढ़ते हैं। धनसिंह सोचता है शायद सोमा के दर्शन हो जाये। धनसिंह को सोमा के घर में सोमा की हालत देखकर दुःख होता है। सोमा की यातना और दरिद्रता से दुःखी हो केवल उसे सहानुभूति ही नहीं देता बल्कि उसे अपने साथ भाग चलने के लिए प्रोत्साहित करता है। सोमा के वैधव्य से लाभ उठाकर, उसको बेचकर अर्थार्जन करने की उसके ससुर की तीव्र अभिलाषा, सोमा को धनसिंह के साथ भाग जाने को विवश कर देती है। सोमा पारिवारिक अत्याचारों से ऊब कर धनसिंह के साथ भाग जाती है। नित्य मार और लांछना के आतप से बिलबिलाती रहनेवाली सोमा उस समय धनसिंह के आगे चलती हुई सहानुभूति और सान्त्वना का आश्रय अनुभव कर रही थी, लेकिन दुर्भाग्य वहाँ भी उसका साथ नहीं छोड़ता। दुर्भाग्यवश दोनों पुलिस व्दारा पकड़े जाते हैं। पुलिस धनसिंह को छः मास कारावास का दण्ड देती है। सोमा तो धनसिंह की गिरफतारी पर पुलिस से उसकी रक्षा के लिए आत्मसम्पर्ण करती है। बेचारी सोमा को एक असहाय नारी होने के कारण पुलिस का अनुचित व्यवहार और बलात्कार सहना पड़ता है। यहीं से सोमा का यंत्रणा भरा जीवन प्रारंभ होता है।

पुलिस से सताई हुई आश्रयहीन सोमा को कामरेड भूषण, ज्वालासिंह ठेकेदार के यहाँ आश्रय दिलवा देता है। यहीं से कामरेड-भूषण और ज्वालासिंह की सुपुत्री मनोरमा के असफल प्रेम की एक प्रासंगिक कथा भी साथ-साथ चलती रहती है। मनोरमा बैरिस्टर जगदीश तथा सभी घरवाले उसे अपना लेते हैं।

---

१ यशपाल – मनुष्य के रूप – पृ.१३।

कम्युनिस्ट-कार्यकर्ता भूषण की सहायता से समाज के प्रतिष्ठित एवं समृध्द परिवार में सोमा को शरण मिलना आदिसे रोमांचक घटनाएँ कथा को गतिशील बनाये रखती हैं। काँगड़ा निवासी भूषण ने लाहौर से बी.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण की। कॉलेज के दिनों में ही वह मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित होकर पार्टी का प्रचार कार्य किया करता है। घर की कठिण अवस्था के बावजूद इधर-उधर से किताबें ले,दर्शनशास्त्र जैसे जटिल विषय में एम.ए. की उपाधि हासिल कर प्राध्यापक बनने की महत्वकांक्षा रखता है लेकिन दुर्भाग्यवश बैंक का क्लार्क बन जाता हैं। भूषण सहपाठी बैरिस्टर सरोला के कारण ही मनोरमा से परिचित होता है। वह सच्चा समाजसेवक है। भद्र समाज का वह विरोध करता है। मनोरमा की साम्यवादी विचारों की आस्था उसे उसके प्रति आकर्षित करती हैं। मनोरमा के साथ हमेशा से ही राजनीतिक विवाद करने में विशेष आनंद लेता है।

जेल से छूट जाने पर जब धनसिंह सोमा को एक सम्पन्न परिवार में पाता है,तो वह भी भूषण की सहाय्यता से उसी परिवार में ड्राइवर मुकर्र होता है। कुछ दिनों तक सोमा और धनसिंह का जीवन बड़े ही आनन्द और सुख से गुजरता है। एक दिन शामशूल और जग्गी इन दो बदमाशों से धनसिंह की मारपीट हो जाती है। अनजाने में धनसिंह से उन दो युवकों का कत्ल हो जाता है। सोमा फिर अकेली रह जाती है। सोमा धनसिंह के बिना अकेलापन महसूस करती है। आगे बैरिस्टर जगदीश के साथ लाहोर जाती है। वह नौकरानी से सरोला के
१ हृदय की महारानी बनकर घर की समस्त भागदौड़ अपने हाथ में ले लेती है। दिनों दिन बढ़ती निकटता के कारण वह जगदीश की वासना का शिकार बनती है परन्तु बैरिस्टर के साथ बढ़ते संबंध उसे घर की पूरी सत्ता दे बैठते है। एक तरह से वह बैरिस्टर की खेल बनकर रहती है। जब बैरिस्टर की तीसरी सन्तान के नामकरण के हेतु सभी घरवाले इकठ्ठे होते हैं,तब घर की नौकरानी सोमा का प्रभाव उन्हें निरंतर अखरता है। लेकिन सोमा घर का काम भय और चिन्ता से

नहीं, ममता और अधिकार से करती थी,अब उसमें काफी बदलाव आ जाता है। भूषण जब जेल से छुटने के बाद सोमा को देखता है तो वह भी तुरंत पहचान ना सका,तभी मनोरमा उसे कहती है --" याद है,एक दिन इस स्त्री का जीवन उस आदमी के बिना सम्भव नहीं था। अब यह दूसरी दुनिया में है। शायद तुम्हें याद होगा, मैंने कहा था - प्रेम केवल जीवन का पूरक है।"[१] जगदीश की बहन मनोरमा भी स्वयं जीविका के लिए आत्मनिर्भर होना चाहती थी, लेकिन पिताजी उसमें बाधा डालते रहे थे, इसीलिए वह पढीलिखी होते हुए भी अपने पैरों पर खडी नहीं रह सकती थी।

जगदीश पुत्र जन्म की खुशी में भाभियों,अपनी पत्नी,बहन सभी को उपहार देने के लिए साडियाँ खरीदने का निश्चय करता है। यह काम मनोरमा पर सौंप देता है। मनोरमा पक्षपात और स्वार्थ का आरोप न लगे, इस विचार से सभी के लिए एक दाम की,एक ही रंग की,एक से ही किनारे की साडियाँ खरीद लाती है। सब की साडीयाँ एक जैसी है इस बात को लेकर बैरिस्टर की माँ और भाभी के विरोध से घर में कलह होता है। परिणामस्वरुप सोमा को घर से निकाल देने का फैसला करते हैं। जब सोमा को इस बातका पता चलता है वह फूट-फूटकर रोती है। रोने के सिवा कोई चारा उसके पास नहीं था। निराश्रित सोमा बरकत का आश्रय पाकर बम्बई आती है। जब बरकत उसे जिंदगीका आगे का ठिकाना पूछता है तो सोमा कहती है कि," मुझे कहीं नदी पर या जंगल में पहुँचा दो।"[२] याने उसे खुद को मालूम नहीं कि,उसकी मंजिल कौनसी है? बरकत शुरु से ही फिल्मी सितारा बनने के स्वप्न देखता है उसीतरह 'सोमा' को भी फिल्म इंडस्ट्री के व्यवसाय में लगाने की सोचता है। सोमा अपना शरीर दाँव पर लगा देती है। वह यह सब जीवन में सुख और इज्जत पाने के लिये करती है। किन्तु प्रश्न उठता है वह धन,सुख,सफलता और विख्याति सब

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.७८।

२ वही पृ.८९।

किस काम के जिसकी प्राप्ति में अपनी इज्जत का दाँव भी लग जाय । सब कुछ लुट जाय । न तन की पवित्रता रहे, न मन की । एक क्षण की आत्माहुति से जो सोमा पतन के पंक में फसती गई उसके लिए कौन उत्तरदायी है ?

भगवतशरण उपाध्याय ने ठीक ही कहा है कि --" पहाड़ों का वह पवित्र रत्न सोमा जो कीचड में गिरी तो फिर उठी ही नहीं " ।[१]

बम्बई में फिल्मी व्यवसाय के अनेक दु:खद और बुरे अनुभवों के पश्चात वह पहाड़न के रूप में एक सफल अभिनेत्री बन जाती है ।

लाहौर में हत्या करने के पश्चात पुलिस के शिकंजो से बचने के लिए धनसिंह लाहौर से दिल्ली आता है । दिल्ली में उस समय राजनीतिक आतंक छाया हुआ था । अनेक कांग्रेस नेता गिरफतार किए गये थे । इसी की जबरदस्त प्रतिक्रिया के रूपमें नेताओं को रिहा करने का दौर चल रहा था । दिल्ली में ऐसे दौर जगह जगह चल रहे थे । धनसिंह पुलिस के प्रति मन में प्रज्वलित नफरत और धृणा के खातिर प्रदर्शनों में शामिल होता है और पुलिस व्दारा गिरफतार किया जाता है ।

सोमा के घर से निकलवाने के बाद मनोरमा और भाभियों में नहीं पटती - वह जब जब नौकरी करने का प्रस्ताव करती है,घर में उसे विरोध ही किया जाता है । मनोरमा के कुँआरी रहनेपर भी वे आपत्ति उठाते हैं । मनोरमा के जरिए लेखक ने समाज की विवाह पध्दति पर तीखा व्यंग किया है । रोजाना के वाद-विवादों से परेशान हो मनोरमा अपने भाई के मित्र फिल्म एजेन्ट सुतलीवाला से अदालती विवाह कर लेती है ।" कुछ समय पश्चात ही मनोरमा अपने पति से पुरूषोचित्त प्यार न पाकर उसे पुंसत्वहीन समझ दु:खी होती है ।"[२] गृहस्थी के जंजाल में फँसने का दु:ख उसे सताता रहता है । परिस्थिति से बाज आकर वह

१ प्रो.प्रविण नायक - यशपाल का औपन्यासिक शिल्प - पृ.९० ।

२ वही पृ.८८ ।

अपने पुराने साथी कॉमरेड भूषण के साथ पार्टी का काम करती रहती है। यह उसके दिल बहलाने का एक मात्र साधन बन जाता है। सुतलीवाला अपने इस फिल्मी धन्धे में मनोरमा को व्यवसाय बढाने का साधन बनाना चाहता है। मनोरमा जब इस बातको टाल देती है तो सुतलीवाला अभिनेत्री पहाडन से सम्बन्ध बनाये रखता है।

इधर राजकीय कैदी के रूप में रिहाई होने पर जब धनसिंह जेल से बाहर आता है तो उसे चारों ओर निरुत्साह जान पडता है। पुलिस का दमन बढ जाता है। उसके दिल में आजादी के लिए कुछ करने की उमंग है। उसके मनमें आजादी की जिद्द है। आजादी के लिए कुछ करने की सोच में ही एक दिन वह आजाद हिंद सेना में कार्य करता हुआ जेल भेज दिया जाता है। जेल से मुक्त होने के पश्चात जब धनसिंह सोमा को एक अभिनेत्री के रूप में देखता है तो वह पुन: भूषण की सहायता से सोमा से मिलने का प्रयत्न करता है। उस समय 'पहाडन' की 'जलता घोंसला' फिल्म चल रही थी। वह सोमा से मिलने के लिए बेचैन हो जाता है। वह अब भी दिलों जान से सोमा को चाहता है। बम्बई में इत्तफाक से उसकी मुलाकात मनोरमा से होती है।

सुतलीवाला अब मनोरमा से दूर रहने की कोशिश करता है। वह एक छत के नीचे होकर भी अजनबी की तरह व्यवहार करते हैं। फिर वह तलाक चाहता है।

सुतलीवाला मनोरमा के तलाक के बाद पहाडन की ओर औरही आकृष्ट होता है। सोमा को जब इस बातका पता चलता है कि, सुतलीवाला शादीशुदा इन्सान है और सुतलीवाला के विचारों के अनुसार उसकी और पत्नी की नहीं पटती तो पहाडन को बहुत विस्मय हुआ, "इतने सज्जन पुरुष के साथ जिस स्त्री का निर्वाह नहीं हो सकता, वह कैसी होगी ? उसने समवेदना की उत्सुकता में कई प्रश्न पूछे।"[१] सोमा के मन में उसके पत्नी को देखने की उत्सुकता जागी।

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१३५।

इसी तरह जब भूषण के जरिए यह पता चला कि,सुतलीवाला एक्ट्रेस पहाड़न से विवाह कर रहा है तो मनोरमा सोचती है -- पहाड़न कौन है ? सुतलीवाला की वास्तविकता नहीं जानती होगी .... एक्ट्रेस ही तो है । दोनों एक दूसरे से मतलब पूरा करना चाहते होंगे । इन दोनों की निभ जायेगी । दोनों मिलकर दुनिया को ठगेंगे ।" [१]

मनोरमा सोचती है,शायद समाज में उन्हीं लोगों की दाल पकती है जो खुद को परिस्थिति के अनुरुप बदल सकते है,लेकिन मनोरमा एक पढी लिखी होकर भी उसकी दृष्टिसे यह असंभव था । फिल्म जगत के व्यापार-व्यवहार में मनोरमा को घोर अनैतिकता जान पड़ती है ।

मनोरमा उदास हो जाती है । " अपमान और बहिष्कार में लिपटी हुई मुक्ति का बोध हृदय पर अनुभव हुए बिना न रहता .... मैं कहाँ जाऊँगी ।" [२]

सुतलीवाला ने मनोरमा की ओर से वकील से दरखास्त बनवा दी थी । गवाही में घर के बैरे का नाम दे दिया था । दरखास्त में सुतलीवाला पर क्रूरता का आरोप था । मनोरमा को अदालत जाना मौत मालूम होता था,परन्तु मजबूरी थी । जज साहब नहीं चाहते थे कि,बसा हुआ परिवार टूट जाये । उन्होंने एक बार फिर सुतलीवाला को सम्मन भेज दिया । सुतलीवाला पर पहाड़न के इश्क का भूत सवार था । उसने अपना मुहरबन्द लिखित बयान भेज दिया कि वह कोई सफाई नहीं देना चाहता था । तलाक मंजूर हो गया । मनोरमा ने अदालत में सुतलीवाला से गुजारा दिवाये जाने के लिए प्रार्थना नहीं की थी । अदालत ने स्वयं ही उसे तीनसौ रूपये प्रतिमास गुजारा दियाजाने का आदेश दे दिया था । " मनोरमा दोबारा विवाह न करे तो उसे आजीवन प्रतिमास तीनसौ रूपये देने होंगे"[3]।

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१४० ।

२ वही पृ.१४१ ।

३ वही पृ.१४१ ।

पहाड़न को जहाँ एक और मिसेज सुतलीवाला को देखनेकी उत्सुकता थी तो सुतलीवाला के प्रभाव से उसके दिल में यह आशंका थी कि, वह स्त्री ही ऐसी होगी जो इस सज्जन पुरूष से कलह करती होगी ।

मनोरमा और सुतलीवाला का तलाक हो जाने के बाद सुतलीवाला सोमा को यह समझ कर घर लाता है कि, मनोरमा घर छोड़कर चली गयी होगी लेकिन पहाड़न सुतलीवाला के साथ उसके घर पहुँचती है तो मनोरमा कुछ कागज और पुस्तकें लिए बाहर आती है । पहाड़न और मनोरमा दोनोंका सामना होता है । जब पहाड़न की दृष्टि सोमा पर पड़ती है तो वहीं विस्मित खड़ी आशंका से सिटपिटा जाती है । मनोरमा भी अपनी जगह खड़ी संकुचित हो जाती है परन्तु जब वह पहाड़न को देखती है तो स्तब्ध रह जाती है और अनायास ही पुकार बैठती है' सोमा ' बाद में पहाड़न उसे देखकर फर्श पर बैठ मूर्च्छित हो जाती है । मनोरमा और सुतलीवाला दोनों उसे उठाकर पलंग पर रखते हैं । मनोरमा चाहती है कि' सोमा' को होश आने तक बैठे लेकिन सुतलीवाला के आदेश पर उसे उसी हालत में छोड़ के जाना पड़ा । मनोरमा यही सोचती है -' सोमा ही पहाड़न है । मनुष्य को कोई समझ सकता है, पहचान सकता है ? "१ " क्या इतना परिवर्तन सम्भव है ? आदमी क्या है, और कितने रूप हो सकते हैं ? एक दिन धर्मशाला में मनोरमा के यहाँ भूषण सोमा को कुत्तों के भय से काँपती हुई बकरी की सी अवस्था में लाया था । आज वह दुनिया को अंगूठा दिखा रही है । अपना बदला ले रही है .... क्या वह सुतलीवाला के साथ सुखी हो सकेगी ? क्या इतनी चालाक हो गयी है ?

पहाड़न जब होश में आती है तो मनोरमा के बारे में विस्तार से जानने के लिए सुतलीवाला से सवालों की बौछार करने लगती है । सुतलीवाला इस बात को टालने की कोशिश करता है ।

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.७९ ।

पहाड़न की हालत खराब होने की वजह से वह रात वहीं पर काटती है, बरकत को जब पता लगता है तो पहाड़न को घर ले जाने के लिए कहता है । बरकत सुनाता है -- " हमसे मत बनो, हम सब समझते हैं । किसी और ख्याल में मत रहना, पहाड़न हमारी निकाह की औरत है । हम तुम्हारी सब साहबी झाड़कर रख देंगे ।"[१]

इधर धनसिंह तो सोमा को अब भी अपनाने के लिए तैयार था । भूषण यह समझाता है कि " उससे मिलने से लाभ क्या होगा ? तुम्हें बुरा लगेगा, उसे बुरा लगेगा । बहुत होगा, वह दु:खी होकर जहर खा लेगी । तुम क्या यही चाहते हो ?"[२]

धनसिंह और ही उद्विग्न हो जाता है, " आप जानते है, मैंने उसके लिए क्या नहीं किया ? नौकरी से गया, जेल काटी, खून किये, फिर जेल काटी, फिर वन-वन का पानी पिया, फिर जेल काटी, मैं देखूं तो सही, मुझे वह क्या जवाब देती है ।"[३]

उस पर मनोरमा भूषण को समझाती है, यह आदमी अब भी उससे उतना ही प्रेम करता है । एक दिन सोमा भी इसके लिए प्राण देने परउतारु थी । सम्भव है, वह सब-कुछ मजबूरी में कर रही हो । उसके मन में अब भी प्रेम जीवित हो, तो वह उसके लिए सब कुछ छोड़ सकती है । तुम इनके मार्ग में अड़चन क्यों बन रहे हो ?

मनोरमा के अनुरोध पर भूषण धनसिंह से सोमा की मुलाकात करवाने की स्वीकृती देता है ।

भूषण अनिच्छा से ही धनसिंह को अंधेरी लेकर जाता है । जब वे दोनों पहाड़न के यहाँ पहुँचते हैं तो बंगले के गेट पर ही पहरा करनेवाला अमीन पहाड़न से मिलने के लिए विरोध करता है और भूषण का अपमान करता है । धनसिंह भी

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१४६ ।

२ वही पृ.१५५ ।

३ वही पृ.१५५ ।

भूषाण का अपमान होते देख उत्तेजना में बरामदे में चढ जाता है । परिणामस्वरुप चौकीदार और धनसिंह में हाथापाई हो जाती है । बरकत यह देखते ही अपने तहमत से छुरा निकालकर धनसिंह पर टूट पडा । धनसिंह उसका हाथ रोकने के प्रयत्न में फर्श पर फिसल गया लेकिन भूषाण के बीच में आ जाने से छुरा भूषाण के कन्धे पर पड गया । खून बह जाने से भूषाण का सिर चकरा गया था । भूषाण ने जब पहाडन को घबराते हुअे देखा तो कहा - सोमा घबराओ नहीं तुमने पहचाना नहीं ? ... मैं भूषाण हूँ, वह धनसिंह है ।"[१]

हरवक्त सोमा यही सोचती है --" दुनिया मेरे गले में बाँह डालकर खेलना चाहती है, परन्तु बाँह थामकर सहारा देने के लिए कोई तैयार नहीं ।"[२]

पहाडन बाहर निकल धनसिंह और भूषाण के प्रति सहानुभूति तो क्या प्रकट करती, उन्हें पहचानती भी नहीं । सुतलीवाला के भूषाण-धनसिंह के विरुध्द गलत बयान देने पर भी वह चुप रही । अभिनेत्री बनने के पश्चात उसके व्यवहार में नम्रता, सज्जनता, सभ्यता और मिठास आने की अपेक्षा एक कटुता, असभ्यता और अभिमान आ जाता है । जिस धनसिंह ने सोमा के लिए जीवन का सारा क्रम बदला, सिध्दान्त बदले, नौकरी छोडी, जेल गया लेकिन उसी ' सोमा ' ने ' पहाडन ' बन जाने पर धनसिंह को पहचानने से इन्कार ही कर दिया । अन्त में पुलिस के हाथ पड ही गया । भूषाण की मृत्यू का समाचार सुनते ही मनोरमा को हादसा बैठ जाता है । उसे देखकर डॉ.जोशी डाँटती है और उपदेश देती है " इससे बडे काम के लिए तुम्हें जिन्दा रहना है ।"[३]

मनोरमा को जब दुबारा होश आता है तो उसे धनसिंह की चिन्ता सताती है । वकीलो व्दारा वह धनसिंह को रिहा करने का यत्न करती है । वकीलों को पुलिस से पता लगता है कि, धनसिंह ने भूषाण पर आँच ना आने के

---

१ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१५७ ।

२ डॉ.सुदर्शन मल्होत्रा - यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन - पृ.७९ ।

३ यशपाल - मनुष्य के रूप - पृ.१५९ ।

लिए सच्ची आपबिती सुनायी है। पुलिस बरकत की खोज करती है। धनसिंह ने ५ वर्षों पहले अनजाने में किये कत्ल को स्विकार करने से पुलिस उसे हिरासत में ले लेती है। उसकी जमानत पंजाब धर्मशाला की अदालत से ही हो सकती थी।

मनोरमा को मानसिक और शारीरिक अस्वस्थता के कारण डॉक्टर उपचार करने लगते है लेकिन डाक्टर की दवाई के बावजूद वह बार-बार अचेत होती है। डॉक्टर सोचते है - यह मानसिक और शारीरिक चोट उसके लिए घातक हो सकती है।

निष्कर्ष

यह एक सामाजिक और घटनाप्रधान उपन्यास है । " मनुष्य के रूप "
१ उपन्यास दार्शनिक धरातल पर भौतिक, परिवेश में परिवर्तन के फलस्वरुप चेतना में होनेवाले परिवर्तनों को अंकित करता है । जो परिवर्तन व्यक्ति या समाज में होता है उसका प्रभाव जीवन मूल्यों पर भी पडता है ।

इस कथा के विषय को सामाजिक क्षेत्र से चुनकर लेखक ने सामाजिक सांप्रदायिक एवं संकीर्ण मनोप्रवृत्तियोंपर प्रहार किया है । नारी पर ढाये जानेवाले दुर्दमनीय, अत्याचार, पुलिस का पशुवत सलूक, जेल जीवन आदि घटनाओं से कथा साकार हो गयी है ।

पहाडी जीवन के वर्णन से इस कथा को आकर्षक बना दिया है । लेखक की अपनी जिन्दगी एवं उसकी अनुभूति रचना को प्रभावित करती रहती है ।

उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण यहाँ विधवा नारी के आत्मनिर्भरता हेतु किया गया संघर्ष है ।

सोमा विधवा होते हुए भी धनसिंह के साथ भाग जाना अनुचित नहीं समझती । वही सोमा अभिनेत्री होनेपर धनसिंह को पहचानने से इन्कार करती है, लेखक ने यह सिध्द करने की कोशिश की है कि, मनुष्य को परिस्थिति के अनुरुप परिवर्तनशील रहना आवश्यक है । सोमा और धनसिंह ऐसे पात्र है जिनसे कथा विकसित होती है । मनोरमा, भूषण की कथा पूर्ण रूपसे कम्युनिस्ट पार्टी की कार्यपध्दति की विवेचना मात्र है । धनसिंह को भी राष्ट्र के प्रति अभिमान है । यहाँ लेखक का स्वानुभाव एवं सूक्ष्म निरीक्षण लक्षणीय है ।

लेखक की धारणा है कि, सभी चीजों की तरह जीवन में प्रेम की गति भी द्वन्द्वात्मक है ।

यशपाल का कहना है कि सच्चा प्रेम वहीं सम्भव है, जहाँ वह आत्मतुष्टि की भूमिपर स्थित हो । पुरूष प्रधान समाज में नारी के जीवन में पुरूष का आश्रय, स्वीकारना ही पडता है, चाहे वह समाज को सामने रखकर या समाज से छिपकर । फिल्मी जगत की अत्यंत सुप्रसिध्द अभिनेत्री हो जाने तथा आत्मनिर्भरता के बाद भी सुतलीवाला द्वारा सोमा का ग्रहण इसी सच्चाई की ओर संकेत करता है ।

सामन्तवादी-पूँजीवादी संस्कारों और व्यवस्था के बीच छुटते हुये समाज की विसंगतियाँ और दुरावस्थाओं को समाज के सामने प्रेक्षेपित करना और समाज को इन सब बातोंसे जागृत करना ही प्रस्तुत उपन्यास का लक्ष्य है ।